विचार बिन्दु

कर्मों की आवाज़ शब्दों से ऊंची होती है। –कहावत

इन पत्थरों को देवता हमने ही बनाया है!

1948 में नोबल पुरस्कार पाने वाले अंग्रेज़ी के विख्यात कवि टी एस एलियट की एक बहुत प्रसिद्ध कविता है द होलोमैन। होलो का शाब्दिक अर्थ है खोखला। तो कविता का शीर्षक है – खोखले लोग। यह कविता प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति के सात बरस बाद, 1925 में प्रकाशित हुई थी। इस कविता के प्रकाशन के तीन बरस पहले इन्हीं टी एस एलियट की महान कविता द वेस्टलैण्ड (बंजर धरती) प्रकाशित हो चुकी थी। इस कविता द होलोमैन की कुछ पंक्तियां हैं: ''बिटवीन द आइडियाएण्ड द रियलिटी/ बिटवीन द मोशन एंड द एक्ट/ फॉल्स द शैडो/ फोरदाइनइज़ द किंगडम..... बिटवीन द डिज़ायर/ एण्ड द स्पाज़्म/ बिटवीन द पोटेंसी/ एण्ड द एक्सिस्टेंस/ बिटवीन द एसेंस/ एण्ड द डिसेंट/ फॉल्स द शैडो/ फोरदाइनइज़ द किंगडम।'' यह कविता आदर्श और यथार्थ के बीच की बहुत बड़ी खाई की बात करती प्रतीत होती है। आदर्श और यथार्थ के बीच जिस खाई पर 1925 में एलियट व्यथित हैं वह खाई अब बहुत अधिक चौड़ी हो चुकी है। लगता है जैसे हमारी ज़िंदगी में अब आदर्श की कोई जगह बची ही नहीं है। हर तरफ धूसर, कर्कश और निजदर्शन तक सीमित यथार्थ है।

इधर राजस्थान में जो राजनीतिक प्रहसन चल रहा है और वह पल-पल जो नए आकार ले रहा है और जिसकी परिणति क्या होगी, यह किसी को भी मालूम नहीं है, वह भी इसी कटु यथार्थ का ही एक रूप है। राजनीति के बारे में बहुत कुछ कहा जाता है और वह सब अच्छा ही नहीं होता है। राजनीति को धूर्तों का खेल तक कह दिया गया है हालांकि मुझ जैसे आशावादी कभी भी इस बात से सहमत नहीं हो सके हैं। मैं राजनीति से गुरेज़ का भी पक्षधर नहीं हूं। मुझे हमेशा लगता है कि जो राजनीति हमारे पूरे जीवन को संचालित करती है उससे हमें दूरी नहीं बरतनी चाहिए। एक सजग और ज़िम्मेदार नागरिक के रूप में राजनीति पर सदा हमारी पैनी नज़र बनी रहनी चाहिए। मुझे बहुत बार यह भी लगता रहा है कि भले लोगों के राजनीति से किनारा कर लेने की वजह से ही वहां दूसरी तरह के लोगों का वर्चस्व कायम हुआ है। एक विद्यार्थी के रूप में मैंने अब्राहम लिंकन के इस कथन को कि लोकतंत्र जनता द्वारा, जनता के लिए, जनता का शासन है हमेशा बहुत महत्वपूर्ण माना है। 15 अगस्त 1947 को देश के स्वाधीन होने के बाद जब नव स्वाधीन देश ने अपने लिए प्रजा तंत्रीय शासन व्यवस्था को चुना और 26 जनवरी 1950 को आत्मार्पित संविधान में इस देश को ''एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' घोषित किया तो स्वभावत: बहुत अच्छा लगा और मन में बहुत सारे सपनों ने अंगड़ाई ली।

15 अगस्त 1947 को देश के स्वाधीन होने के बाद जब नव स्वाधीन देश ने अपने लिए प्रजा तंत्रीय शासन व्यवस्था को चुना और 26 जनवरी 1950 को आत्मार्पित संविधान में इस देश को ''एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' घोषित किया तो स्वभावतः बहुत अच्छा लगा और मन में बहुत सारे सपनों ने अंगड़ाई ली।

लेकिन जब 2022 में खड़े होकर हम उन सपनों पर नज़र डालते हैं तो बकौल टी एस एलियटआइडिया और रियलिटी के बीच बहुत बड़ी खाई नज़र आती है। क्या वास्तव में हमारा शासन जनता द्वारा, जनता के लिए, जनता का रह गया है? ये जो लोग राजस्थान में लड़ भिड़ रहे हैं, क्या हमारे लिए लड़ रहे हैं? क्या इनके सोच में हम अर्थात इनके मतदाता, इनकी प्रजा दूर-दूर तक कहीं हैं? क्या इन्हें इस तरह लड़ते हुए एक पल को भी नहीं लगता है कि प्रांत की जनता इनकी तरफ किन उम्मीद भरी निगाहों से ताकती है? ये लोग अपने मतदाताओं के प्रति कितना निर्मम छल कर रहे हैं? और बात केवल आज की ही नहीं है। जब सितारों वाले वैभवपूर्ण होटलों में हमारे माननीय बाड़ाबंद हुए थे तब भी यही सारी बातें मन में आई थीं। और यह सब एक दिन में नहीं हुआ है। एक जगह नहीं हुआ है। आज जो राजस्थान में हो रहा है वह पहले कई अन्य प्रांतों में और देश में भी हो चुका है। प्रहसन सदा एक जैसा होता है, बस उसके किरदार बदल जाते हैं।

आजकल इसकी शुरुआत चुनाव से होती है। जिस दल के जीतने की ज़्यादा सम्भावना होती है उसी दल के दरवाज़े पर टिकिटों के लिए मारामारी भी ज़्यादा होती है। हर टिकिटार्थी एक ही राग अलापता है कि वह जनता की सेवा करना चाहता है। अगर आप उससे पूछ सकें तो उसके पास शायद ही इस सवाल का जवाब हो कि वह सेवा करेगा कैसे? असल में उसे तो केवल चुनाव की वैतरणी को पार करना होता है। आजकल तो उम्मीदवार आपके पास वोट मांगने भी नहीं आता है। उसके सेवक ही आकर आपसे यह आदेश पूर्ण आग्रह करते हैं कि अमुक जी को वोट देना है। प्रत्याशी टिकिट मिलते ही जनता से दूर हो जाता है और फिर यह दूरी बढ़ती ही जाती है। अगर वह विधायक जैसे पद पर जीत गया तो फिर आप उससे मिलने की आस छोड़ ही दीजिए। और जब वह विधायक बन जाता है उसका गाना यह होता है कि जनता की सेवा के लिए उसका मंत्री बनना ज़रूरी है। अगर वह मंत्री बन गया, तो समझ लीजिए उसे आप केवल टीवी के पर्दे पर ही देख सकेंगे। इससे अगली सीढ़ी होती है मुख्य मंत्री बनना! बिना मुख्य मंत्री बने भला जनता का कल्याण कैसे हो सकता है? राजस्थान में इधर यही तमाशा चल रहा है।

मैं बहुत बार सोचता हूं, दोस्तों से भी पूछता हूं कि एक व्यक्ति मुख्य मंत्री बन गया तो उसने हमारे लिए क्या अनूठा कर दिया और अगर उसे हटा कर दूसरा बन जाएगा तो वह क्या अनूठा कर देगा? हम अभी भी बद हाली में जी रहे हैं, आगे भी बद हाली में ही जीते रहेंगे। सच तो यह है कि किसी के पास कोई एजेण्डा नहीं है। हरेक के पास कहने को अमूर्त और चिकनी चुपड़ी बातें हैं। हरेक के पास वादों के खोटे सिक्के हैं। हरेक पार्टी का वफादार सिपाही है, हरेक पार्टी आलाकमान के एक इशारे पर कुछ भी कर देने को तैयार बैठने की डींगें हांक रहा है। लेकिन पार्टी आलाकमान की इच्छा का उसके लिए कितना महत्व है, यह हम हाल के दिनों में देख चुके हैं। मैं सब कुछ कर सकता हूं, बस मुझे इस कुर्सी पर बैठे रहने देना। इससे उतरने की बात तो मैं सपने में भी नहीं सोच सकता। हर नियम, हर व्यवस्था को हम धता बता सकते हैं, बताते हैं। हम ही हैं जो एक व्यक्ति एक पद का सिद्धांत बनाते हैं और हम ही उससे बचने की गली निकालते हैं! हम ही हैं जो पार्टी को सर्वोपरि बताते हैं और हम ही हैं जो उसे ठेंगा दिखाते हैं!

जो हमारे वोटों से जीतते हैं उनका हाल यह है कि जनता की सेवा के लिए इनकी ललक इतनी प्रबल है कि इन्हें एक पार्टी छोड़ कर दूसरी में जाने में भी कोई संकोच नहीं होता है। आज जिसे पानी पी पीकर कोसते हैं, कल जनता की सेवा के पवित्र भाव के चलते उसी दल के कसीदे पढ़ने में इन्हें तनिक भी लज्जा का अनुभव नहीं होता है। असल चीज़ तो है जनता की तथाकथित सेवा। जिस जनता से इनका दूर-दूर तक कोई रिश्ता नहीं रह जाता उसी जनता की सेवा के लिए ये ज़मीन आसमान एक किए रहते हैं। अपने प्रतिस्पर्धी को ये फूटी आंखों नहीं देख सकते, भले ही वह खुद इन्हीं के दल का क्यों न हो! ऐसे में दलीय निष्ठाओं की बात रह ही कहां जाती है? आज जो लोग राजनीति में हैं उनमें से अधिकांश की निष्ठा न अपने दल के प्रति है, न उसके नेतृत्व के प्रति, न जनता के प्रति, न किसी भी आदर्श के प्रति! इनकी निष्ठा सिर्फ एक चीज़ के प्रति है और वह है इनका अपना स्वार्थ!

यह विचारणीय है कि कैसे एक आदर्श से अपनी यात्रा प्रारम्भ कर हम इस बदनुमा यथार्थ तक आ पहुंचे हैं? जब हम इस बात पर विचार करेंगे तो पाएंगे, कि इसमें हमारी अपनी उदासीनता की भूमिका भी कम नहीं है। हमने राजनीति को बुरा कह-मान कर उससे किनारा कर लिया और इन्हें खुल कर अपना खेल खेलने को छुट्टा छोड़ दिया। यह भी कि आदर्शों से ख़ुद हमने भी किनारा कर लिया है अपने निर्वाचित जन प्रतिनिधियों से हमारी अपेक्षाएं भी सदा वाज़िब नहीं होती हैं। हमारी अपेक्षाओं पर भी हमारे स्वार्थ हावी रहते हैं। जब उन्हें चुनने का मौका आता है तो हम भी अपने विवेक को ताक पर रख कर कभी धर्म, तो कभी जाति, कभी कम्बल तो कभी शराब के बदले अपने वोट का सौदा करने में नहीं झिझकते हैं! अपने चुने हुए लोगों को हम ही इतना ज़्यादा सर पर चढ़ा लेते हैं कि ख़ुद उन्हें अपने भगवान होने का गुमान होने लगता है। बशीरबद्र साहब ने क्या खूब कहा है: ''सर झुकाओगे तो पत्थर देवता हो जाएगा/ इतना मत चाहो उसे वो बेवफ़ा हो जाएगा।'' कहना अनावश्यक है कि हमने ही अपनी नासमझी, और बहुत बार स्वार्थ के वशीभूत होकर इन पत्थरों को देवता बनाया है। अब जब ये सब बेवफा हो गए हैं तो यह भी हमारा ही दायित्व है कि इन्हें अपनी औकात से परिचित कराएं और इन्हें इनकी ज़िम्मेदारियों का निर्वाह करने के लिए विवश करें! उदास कर देने वाली सच्चाई यह है कि अभी ऐसा होता दीख नहीं रहा है!

- अतिथि सम्पादक:
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

बाड़मेर के उखड़ा गांव से निकली काष्ठ कला देश-विदेश में पहुंची

राजस्थानी हस्तशिल्प कला श्रृंखला में मरु प्रदेश स्थित बाड़मेर के कलाकारों द्वारा लकड़ी पर उत्कृष्ट नक्काशी का काम जिले का मुख्य आकर्षण केन्द्र है। पश्चिमी राजस्थान के मरुस्थलीय भू-भाग के सिद्धहस्त कलाकार लकड़ी पर उत्कृष्ट नक्काशी द्वारा अपने मन की सहज अभिव्यक्ति को जीवन्तता प्रदान करते हैं।

वर्तमान में जिले में लगभग 500 से 700 कुशल कारीगर यहां फर्नीचर कार्विंग में कार्यरत हैं। प्रारंभ में यहां रोहिड़ा की लकड़ी आसानी से उपलब्ध थी। रोहिडे की लकड़ी पर कार्विंग बारीक उत्कृष्ट एवं आसानी से होती थी। आजकल रोहिड़ा की अनुपलब्धता के कारण सागवान एवं अखरोट की लकड़ी कार्विंग की जाती है।

पूर्व में बाड़मेर से 14 कि.मी. दूर स्थित उखड़ा नामक गांव में केवल जांगिड़ जाति के कलाकार ही काष्ठ पर नक्काशी का काम करते थे। यहां तक कि इस कला को अन्य जाति को सिखाना भी जांगिड़ समाज में वर्जित था, किन्तु अब ऐसी कोई वर्जना नहीं है। अब तो यह कला लगभग सम्पूर्ण जिले एवं प्रदेश में विस्तार पाते-पाते सीमा पार पहुंच रही है। काष्ठ पर नक्काशी के काम का इतिहास देखें तो प्राचीन एवं आधुनिक कलात्मक नक्काशी के अंतर्गत काफी भिन्नता है। पाट, बाजोट, तोरण, थाल, थम्भ, द्वार-चौखट, अलमारी, खूंटियाँ, चक्की, हुक्का, बैलगाड़ी, ऊँट की पलाण, शतरंज के मोहरे, झरोखे, चारपाई, पलंग, झूले-पालने, आदि प्राचीन काल की देन हैं। आजकल डबल बैड के पलंग, ड्रेसिंग टेबल, स्टूल, सोफासेट, कुर्सियाँ, दीवान, पलंग, सेन्ट्रल टेबल, टी-टेबल, कॉर्नर टेबल, फोटोफ्रेम, टी.वी. ट्राली, शू-रेक, डाइनिंग टेबल सेट तथा दरवाजे-खिड़कियों पर पारम्परिक कलात्मक नक्काशी नई उत्कृष्ट पहचान बना रही है। इनकी मांग देश-विदेशों में दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है।

बाड़मेर के स्थानीय कलाकार काष्ठ पर नक्काशी के नित नए आयाम छू रहे हैं तथा कलाकृतियों के निर्माण की वैज्ञानिक तकनीकी की सूक्ष्म जानकारी की कठोरतम साधना से काष्ठ पर अपनी अनूठी कल्पनाओं को साकार करते हैं। यद्यिप जहां तक नक्काशी में उकेरी जा रही डिजाइनों का प्रश्न है वर्तमान में ऐसा कोई विशेष अन्तर दिखाई नहीं देता है, क्योंकि हस्तशिल्प-कला में मूलत: पारम्परिक स्वरूप और साधना पर विशेष बल दिया जाता रहा है अत: फूल-पत्तियाँ, लता-बेलें, फूल या पुष्प समूह वर्ग या डिब्बियाँ, त्रिकोण या गोल चक्र, शक्कर पारे, सांकल, हाथी, घोड़े, बैल, हिरण, हंस, वृक्ष तथा आड़ी-तिरछी रेखाएँ आदि परम्परागत डिजाइनें ही प्राय: प्रयुक्त होती है। आज कल हस्तशिल्प कला में प्रयुक्त डिजाइनों की सहज उपलब्धि राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान द्वारा भी होने लगी है। अब कम्प्यूटर द्वारा त्वरित डिजाइन तैयार करने की अनेक प्रणालियों का प्रचलन है, किन्तु बाड़मेर के सिद्धहस्त कलाकारों द्वारा अपनी पुश्तैनी पारम्परिक कलात्मक शैली में अन्य किसी भी प्रकार की छेड़छाड़ पसन्द नहीं की जाती है। वे आज भी काष्ठ पर नक्काशी के अतीत के इस गौरव को अक्षुण्ण बनाए रखने में सक्षम हैं। काष्ठ के जिस हिस्से पर नक्काशी का काम करना होता है उसके नाप-जोख एवं आकार के अनुरूप ही डिजाइन उकेरी जाती है ताकि तैयार कृति पर डिजाइन सम्पूर्ण दिखाई दे। कृति पर उकेरी गई आकृति को समगत संतुलित बनाये रखने के लिए सिद्धहस्त कलाकारों की काल्पनिक उडान के साथ गहन सूझ-बूझ, हाथों का कुशल संचालन एवं गलियों की चपलता अनिवार्य है, तभी कलाकार के मस्तिष्क की उपज एवं कलात्मक सौष्ठव का काष्ठ पर सही प्रदर्शन होता है। लकड़ी का तैयार फर्नीचर अपने मौलिक स्वरूप में नितान्त खुरदरा होता है। उसके ऊपर स्प्रे एवं मैलामेन्ट की पॉलिश की जाती है जिससे वह आकर्षक एवं चमकदार दिखाई देता है। इसके अलावा आवश्यकता पड़ने पर सूक्ष्म नक्काशी पर जमे धूल के कणों को हटाने के लिए लकड़ी की इन कृतियों पर पाली-यूरेथीन की पतली परत स्प्रे द्वारा चढ़ाई जाती है, जिससे पानी से कभी-कभी धोने पर भी लकड़ी पर विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता है। जहां एक तरफ लकड़ी पर नक्काशी का काम अत्यन्त श्रम एवं कष्टसाध्य होता है वहीं महंगा होता है। इसे खरीदना आम आदमी की क्रय-शक्ति से बाहर की बात है। बाड़मेर में तैयार काष्ठ पर नक्काशी की तैयार कृतियां मुख्यत: ग्राहक की मांग के अनुरूप तथा अनुकूल बनाई जाती हैं। इन्हें जयपुर, दिल्ली, बम्बई आदि महानगरों में स्थित एक्सपोर्ट फर्मों के माध्यम से विदेशों में निर्यात की जाती हैं। पश्चिमी राजस्थान के मरुस्थलीय भू-भाग क्षेत्र का यह हिस्सा आज विशिष्ट रूप से बाड़मेर बाड़मेरी फर्नीचर नक्काशी कला का पर्याय बन गया है।

पन्नालाल मेघवाल

- पहले यहां रोहिड़ा और अब सागवान एवं अखरोट की लकड़ी पर कार्विंग की जाती है
- इस कला से निर्मित सामान की मांग देश-विदेशों में दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है

पन्नालाल मेघवाल
वरिष्ठ लेखक एवं स्वतंत्र पत्रकार।

बेनीवाल युवाओं की मांगों को लेकर जयपुर से दिल्ली कर रहे साइकिल यात्रा

झुंझुनूं, (निसं)। प्रदेश के युवाओं की चिकित्सा विभाग की नई भर्तियों सीएचओ, लैब टेक्नीशियन, रेडियोग्राग्रायूटर, नर्सिंग प्रोफेसर, नर्सिंग ऑफिसर, फार्मासिस्ट, मेडिकल ऑफिसर, आयुर्वेद डॉक्टर्स, आयुर्वेद नर्सेज की विज्ञप्त जारी कराने, सीएचओ वेटिंग लिस्ट और स्पोर्ट्स लिस्ट, सीएचओ नियमितीकरण, ओबीसी आरक्षण की विसंगतियों को दूर करने, शैडो पोस्ट क्रिएट कराने, पैरामैडिकल संवर्ग ऑपरेशन थियेटर टेक्निशियन, ब्लड बैंक टेक्निशियन, नेत्र सहायक, डायलिसिस व अन्य कैडर निर्माण करने, एससी-एसटी छात्रों की स्कॉलरशिप दिलाने, सभी भर्तियों में ओबीसी ईडब्लूएस किस जाति प्रमाण पत्रों की समय सीमा का समाधान कराने, प्राइवेट अस्पतालों में न्यूनतम सैलरी 20000 किए जाने, नवीन मेडिकल कॉलेजों में शिलान्यास कर उनमें नर्सिंग कॉलेजों में और मेडिकल कॉलेज में प्रोफेसरों की भर्ती करने सहित सभी मांगों को लेकर ऑल इंडिया मेडिकल स्टूडेंट्स एसोसिएशन यूनाइटेड के अध्यक्ष भरत बेनीवाल द्वारा 2 अक्टूबर गांधी जयंती पर गांधी सर्किल जयपुर से दिल्ली कि साईकिल यात्रा शुरू की गई। वे 271 किलोमीटर का युवा सत्याग्रह मार्च निकालेंगे। दिल्ली पहुंचकर कांग्रेस आलाकमान को अपनी सभी मांगों से अवगत करवाएंगे। क्योंकि प्रदेश सरकार में सभी मंत्री आलाकमान ही सुनते हैं। बेनीवाल ने बताया कि सरकार को जगाने और कांग्रेस आलाकमान को प्रदेश में युवाओं की स्थिति से अवगत कराने के लिए साइकिल यात्रा कर रहे हैं। चिकित्सा विभाग की मांगों को लेकर केंद्रीय चिकित्सा मंत्री मनसुख मांडविया को भी ज्ञापन दिया जाएगा अगर मांगे पूरी नहीं हुई तो जयपुर में बड़ी रैली करके अनिश्चितकालीन महापड़ाव डालेंगे।

मांगे पूरी नहीं होने पर जयपुर में बड़ी रैली करके महापड़ाव डाल सकते हैं बेनीवाल।

जियो हैरिटेज साइटस के रूप में मेहरानगढ़ क्षेत्र महत्वपूर्ण

जोधपुर, (का.सं.)। इण्टैक जोधपुर चैप्टर एवं मेहरानगढ़ म्यूज़ियम ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में भू-विरासत पर्यटन के महत्त्व पर संगोष्ठी एवं ब्रेन स्टॉर्मिंग सत्र का आयोजन चौकेलाव महल, मेहरानगढ़ दुर्ग में पूर्व महाराजा गजसिंह की अध्यक्षता में आयोजित सम्पन्न हुई। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि जियो हैरिटेज साइटस के रूप में मेहरानगढ़ व इसके आस-पास का क्षेत्र बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। जोधपुर के लिए यह बहुत ही गौरव की बात है कि यदि इस क्षेत्र को विश्व भू-विरासत की श्रेणी में संरक्षित किया जाता है तो नि:संदेह जोधपुर पर्यटन और वैज्ञानिक शोध की दृष्टि से मील का पत्थर साबित होगा।

इण्टैक जोधपुर के संयोजक डॉ. महेन्द्रसिंह तंवर ने बताया कि इस संगोष्ठी में आमन्त्रित विशेषज्ञों के व्याख्यान भू-विरासत पर्यटन एवं जियो पार्क विश्व भू-विविधता दिवस (6 अक्टूबर) की प्रथम ईवेण्ट में छ: व्याख्यान हुए। जय नारायण विश्वविद्यालय जोधपुर के भूविज्ञान विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. एस.सी. माथुर ने भू-विरासत, पर्यटन एवं जियोपार्क के अन्तर्राष्ट्रीय महत्व के परिपेक्ष्य में मेहरानगढ़ पहाड़ी की विशेषताएँ बताते हुए जोधपुर में भारत के प्रथम जियोपार्क की संकल्पना दशाई।

आरपीएससी, अजमेर के पूर्व अध्यक्ष डॉ. शिवसिंह राठौड़ ने मेहरानगढ़ की पहाड़ियों में भूजल विरासत एवं हेरिटेज स्टोन रिर्सोस (जोधपुर सेण्ड स्टोन) से निर्मित भू-स्मारकों का महत्व बतलाते हुए इन्हें जियोपार्क में भू-विरासत के साथ ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक स्थलों का महत्व बताया। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर के भूविज्ञान के पूर्व अध्यक्ष प्रो. पी.एस. राणावत ने मेवाड़ की विभिन्न भू-विरासतों के महत्व एवं जियोपार्क पर प्रकाश डाला।

नेशनल पेंटिंग कॉम्पटीशन-वर्कशॉप के समापन पर कलाकारों को सम्मानित किया

आबूरोड़, (निसं)। आबूरोड़ के ब्रह्माकुमारीज संस्थान के मनमोहिनीवन परिसर में आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर थीम के तहत चल रही नेशनल पेंटिंग कॉम्पटीशन एवं वर्कशॉप का समापन हो गया।

समापन कार्यक्रम में चार विधाओं में तीन - तीन सबसे बेस्ट पेंटिंग्स का चयन निर्णायक मंडल द्वारा किया गया। इस आधार पर 12 प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर आने वाले कलाकारों का सम्मान किया गया। इस नेशनल पेंटिंग कॉम्पटीशन में देशभर से जाने माने कलाकारों ने भाग लिया। संस्थान के कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय ने कलाकारों को सम्मानित करते हुए कहा कि कला में वह ताकत होती है जिस बात को हम शब्दों में बयां नहीं कर सकते हैं। उसे कला के माध्यम से अभिव्यक्त कर सकते हैं। कलाकार एक साधक भी होता है। कॉम्पटीशन में कलाकारों ने संस्थान के संस्थापक ब्रह्मा बाबा पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी, राजयोगिनी दादी जानकी, राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि और वर्तमान मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी की पोर्टेट, स्वर्णिम भारत, भारत की सांस्कृतिक विरासत और आध्यात्मिक भारत का योग चक्र को बड़ी ही बारीकी से बखूबी उकेरा। प्रतियोगिता में लगभग तीन सौ चित्रकारों ने भाग लिया। सभी कलाकारों ने चार विषयों पोट्रेट पेंटिंग, स्वर्णिम भारतए कल्चरल हेरिटेज ऑफ इंडिया और स्प्रिचुअल इंडिया पर रंगों के माध्यम से अपने विचारों को बहुत ही सुंदर रुप में प्रस्तुत कियाए जिसे सभी ने बहुत सराहा।

इस राष्ट्रीय प्रतियोगिता में जज के रूप में दिल्ली से संगीता राजे, बडौदा से अतुल पडिया और कोलकाता से ब्राटिन खान ने भूमिका निभाई। आरंग से गौरव कुमार पटेलए रायपुर से अभिलाष देवांग, भावनगर से विपिन दवे, कोटा से शैलेंद्र कुमार जोशी, अहमदाबाद से मुकेश कुमार पटेल, दिल्ली से हरीश यादव, दिल्ली से सुमन, श्रीगंगानगर से साहिल, भिलाई से चित्राए पुणे से गोपाल, इटावा से सत्यम, रेवाडी से कपिल, सूरत से ढोलकिया मुकेश, औरंगाबाद से प्रकाश बालाजी, कालाबुरागी से नागराज, नवी मुंबई से पूजा, नोएडा से अंजुम परवीन, थाने से नेहा, अहमदाबाद से तेजस्वी और उदयपुर से रितिक की बेहतर पेंटिंग पर सम्मानित करते हुए सांत्वना पुरस्कार दिया गया।

ब्रह्माकुमारी संस्थान में नेशनल पेंटिंग कॉम्पटीशन वर्कशॉप के समापन पर चित्रकारों को स्मृति चिन्ह दिये।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 3 अक्टूबर, 2022

आश्विन मास शुक्ल पक्ष, अष्टमी तिथि, सोमवार विक्रम सम्वत 2022, पूर्वाषाढा रात्रि 12.25 तक, शोभन योग दिन 2.25 तक बवकरण सांय 4.38 तक, चन्द्रमा मंगलवार प्रात: 6.02 मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रहस्थिति - सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-धनु, मंगल-बुध, बुध-कन्या, गुरु-मीन, शुक्र-कन्या, शनि-मकर, केतु-तुला राशि में।

रवियोग रात्रि 12.25 से आरम्भ होगा। आज दुर्गाष्टमी मत्स्य उत्सव मेला छह बालाओं और तारादेवी है और अत्रपूर्णा परिक्रमा योग 4.38 पर पूर्ण होगा। श्रेष्ठ चोघडिया अमृत सूर्योदय से 7.52 तक शुभकरण 10.45 तक चर 1.44 से 3.12 तक, लाभ-अमृत 3.22 से सूर्यास्त तक।

राहुकाल 7.30 से 9.00 तक सूर्योदय 6.24 सूर्यास्त 6.08

मेष

धार्मिक कार्यों में भाग लेना का अवसर मिलेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। परिवार में शुभ मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष

अपनी कार्य योजना की सीमित रखें। मित्रो रिश्तेदारों से अनबन और वाद-विवाद बड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा।

मिथुन

परिवार में आपसी सहयोग समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक सामाजिक समारोह संपन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा।

कर्क

विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यक्तिगत परेशानियां दूर होने लगेगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। धार्मिक कार्यों में आस्था बडेगी।

सिंह

परिवार में शुभ मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख शांति बनी रहेगी। व्यावसायिक आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य योजनानुसार बनने लगेगे।

कन्या

घर परिवार में सुख शांति बनी रहेगी। परिवार में धार्मिक सामाजिक समारोह संपन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में व्यवस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य योजनानुसार बनने लगेगे।

तुला

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाये रखना ठीक रहेगा। परिवार में धार्मिक कार्य संपन्न हो सकते हैं।

वृश्चिक

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेगे। संभावित स्रोत से धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

धनु

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेगे। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनना लगेगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मकर

अर्नगल कार्यों में समय खराब हो सकता है। पारिवारिक कार्यों के कारण भाग दौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य संबंधित परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

कुंभ

आर्थिक वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्यों पर नियंत्रण बडेगा। परिवार में धार्मिक कार्य संपन्न हो सकते हैं।

मीन

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करे। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। परिवार में धार्मिक कार्य संपन्न हो सकते हैं।